3 साना-साना हाथ जोड़ि

– मधु कांकरिया

पाठ का सार

प्रस्तावना–लेखिका मधु कांकरिया ने अपने यात्रा-वृतांत में गंगटोक से लेकर हिमालय तक की यात्रा में प्राकृतिक दृश्यों के वर्णन के साथ उन दृश्यों को भी छुआ है जिनमें विषम परिस्थितियों में पुरुष और महिलाएँ जीवन संघर्ष में लगी रहती हैं। इस पाठ में लेखिका के सहृदया होने का पता चलता है क्योंकि उसका मन प्रकृति की मनोहारी छटा देखने से अधिक जोखिम भरे कार्यों को करती हुई महिलाओं की ओर देखने में लगता है।

गंगटोक शहर–लेखिका को गंगटोक शहर देखकर ऐसा लगा कि आसमान की सुंदरता नीचे बिखर गई है और सारे तारे नीचे बिखर कर टिमटिमा रहे हैं। बादशाहों का एक ऐसा शहर जिसका सुबह, शाम, रात सब कुछ सुंदर था। सुबह होने पर एक प्रार्थना होंठों को छूने लगी–साना-साना हाथ जोड़ि, गर्दहु प्रार्थना। हाम्रो जीवन तिम्रो कौसेली। (छोटे-छोटे हाथ जोड़कर प्रार्थना कर रही हूँ कि मेरा सारा जीवन अच्छाइयों को समर्पित हो) लेखिका ने प्रार्थना के ये बोल आज सुबह ही एक नेपाली युवती से सीखे थे।

सुबह यूमथांग के लिए निकलना था, किंतु आँख खुलते ही बालकनी की ओर भागी थी, क्योंकि लोगों ने बताया था कि यदि मौसम साफ हो तो बालकनी से ही हिमालय की सबसे ऊँची चोटी कंचनजंघा दिखाई देती है। किंतु पिछले वर्ष की तरह ही आज भी आसमान हल्के-हल्के बादलों में ढका था। कंचनजंघा तो नहीं दिखाई दी किंतु तरह-तरह के इतने सारे रंग-बिरंगे फूल दिखाई दिए कि लगा कि फूलों के बाग में आ गई है।

यूमथांग गंगटोक से 149 कि.मी. दूर था। जिसके बारे में ड्राइवर जितेन नार्गे बता रहा था कि सारे रास्ते में हिमालय की गहनतम घाटियाँ और फूलों से लदी वादियाँ मिलेंगी और लेखिका उससे पूछने लगी थी–'क्या वहाँ बर्फ मिलेगी?

यूमथांग तक का रास्ता–यूमथांग के रास्ते में शांति और अहिंसा के प्रतीक रूप में एक कतार में लगी सफेद रंग की 108 मंत्र लिखी पताकाएँ दिखाई दीं। इनके बारे में नार्गे ने बताया–यहाँ बुद्ध की बड़ी मान्यता है। जब भी किसी बुद्धिस्ट की मृत्यु होती है, तो उसकी आत्मा की शांति के लिए शहर से दूर किसी पवित्र स्थान पर ये 108 पताकाएँ फहरा दी जाती हैं। इन्हें उतारा नहीं जाता है। अपने-आप धीरे-धीरे नष्ट हो जाती हैं। कई बार नए कार्य की शुरुआत में भी ऐसी पताकाएँ लगा दी जाती हैं। पर वे रंगीन होती हैं। नार्गे बोले जा रहा था किंतु लेखिका नार्गे की जीप में लगी दलाई लामा की तसवीर की ओर देखे जा रही थी। उसने ऐसी दलाई लामा की तसवीरें दुकानों पर भी टँगी देखी थीं।

रास्ते में कवी-लोंग स्टॉक पड़ा। जहाँ 'गाइड' फिल्म की शूटिंग हुई थी। यहाँ स्थानीय जातियों के बीच चले सुदीर्घ झगड़ों के बाद शांति वार्ता और संधि-पत्र के बारे में बताया। आगे बढ़े। रास्ते में एक कुटिया में घूमते हुए धर्म-चक्र के बारे में बताया कि यह प्रेअर व्हील है। इसको घुमाने से सारे पाप धुल जाते हैं। धीरे-धीरे ऊँचाई की ओर बढ़ रहे थे। कार्य करते हुए नेपाली युवक-युवतियाँ और छोटे-छोटे घर दिखाई दे रहे थे और हिमालय विराट रूप में दिखाई दे रहा था। दर्शकों, यात्रियों का काम्य हिमालय, पल-पल परिवर्तित हिमालय। हिमालय बड़ा होते-होते विशालकाय होने लगा। भीमकाय पर्वतों के बीच और घाटियों के ऊपर बने सँकरें रास्तों से गुजरते ऐसा लग रहा था कि रंग-बिरंगे फूल मुस्करा रहे हों और हम किसी सघन हरियाली वाली गुफा के बीच हिचकोले खाते निकल रहे हों।

इस असीम बिखरी सुंदरता को देख सैलानी झूम-झूम गा रहे थे–"सुहाना सफर और ये मौसम हँसी...।" किंतु लेखिका एक ऋषि की तरह शांत थी वह सारे दृश्य को अपने भीतर भर लेना चाहती थी। वह जीप की खिड़की से आसमान को छूती हुई पर्वत-शिखरों को देखती, कभी चाँदी की तरह चमकती तिस्ता नदी के सौंदर्य को देखती कभी शिखरों के भी शिखर से गिरते हुए झरने 'सेवन सिस्टर्स वॉटर फॉल' को देखती जिसके सौंदर्य को सैलानी अपने-अपने कैमरों में कैद कर रहे थे।

लेखिका ने जीप से उतरकर किसी राजकुमारी-सी एक पत्थर के ऊपर बैठ बहती जलधारा में पाँव डुबाया और भीतर तक भीग गई। मन काव्यमय हो उठा, सत्य और सौंदर्य को छूने लगा। लेखिका को लगा कि उन अद्भुत क्षणों में जीवन की शक्ति का अहसास हो रहा है। मैं स्वयं भी देश और काल की सरहदों से दूर बहती धारा बन बहने लगी हूँ। भीतर की सारी तामसिकताएँ और दुष्ट वासनाएँ इस निर्मल धारा में बह गई हैं। इतने में नार्गे ठेलने लगा, आगे इससे भी सुंदर नजारे मिलेंगे।

लेखिका अनमनी-सी उठी और थोड़ी देर बाद वैसे ही नजारे आत्मा और आँखों को सुख देने वाले नजारे। लेखिका को आश्चर्य हो रहा था कि पल भर में ब्रह्मांड में कितना कुछ घटित हो रहा था कि सतत् प्रवाहमान झरने, नीचे बहती हुई तिस्ता नदी, ऊपर मँडराते आवारा बादल, मद्धिम हवा में हिलोरे लेते हुए फूल, सब अपनी-अपनी लय में बहते हुए चैरवेति-चैरवेति। यह देख लेखिका को एहसास हुआ कि–जीवन

का आनंद है यही चलायमान सौंदर्य। इस सौंदर्य को देखकर उसे लगा कि मैं सचमुच ईश्वर के निकट हूँ और सुबह सीखी हुई प्रार्थना फिर होंठों को छूने लगी–साना-साना हाथ जोड़ि...।

मातृत्व और श्रम साधना का दृश्य–यकायक लेखिका के मन से सौंदर्य की छटा छिटक गई। ऐसे छिटक गई कि मानो नृत्यांगना के नूपुर अचानक टूट गए हों। उसने देखा कि पहाड़ी औरतें पत्थरों पर बैठी पत्थर तोड़ रही हैं। गूँथे आटे-सी कोमल काया परंतु हाथों में कुदाल और हथौड़े! कईयों की पीठ पर बँधी डोको (बड़ी टोकरी) में उनके बच्चे भी बँधे हुए थे। कुछ कुदाल को भरपूर ताकत के साथ जमीन पर मार रही थीं।

इतने स्वर्गीय सौंदर्य के बीच भूख, मौत, दैन्य और जिंदा रहने का यह जंग! मातृत्व और श्रम-साधना साथ-साथ। वहीं खड़े बी.आर.ओ. के कर्मचारी से लेखिका ने पूछा–'यह क्या हो रहा है।' उसने बताया कि जिन रास्तों से गुजरते आप हिमशिखरों से टक्कर लेने जा रही हैं। उन्हीं रास्तों को ये पहाड़िनें चौड़ा बना रही हैं।

'बड़ा खतरनाक कार्य होगा'–यह लेखिका के कहने पर उसने कहा–पिछले महीने तो एक की जान चली गई। जरा-सी चूक और सीधी पाताल प्रवेश। तभी लेखिका को सिक्किम सरकार द्वारा लिखे बोर्ड की याद आई–जिस पर लिखा था (आप ताज्जुब करेंगे पर इन रास्तों को बनाने में लोगों ने मौत को झुठलाया है) यह याद कर लेखिका का मानसिक चैनल बदल गया। उसे पलामू और गुमला के जंगलों की याद आ गई। उसने वहाँ देखा था कि पीठ पर बच्चे को कपड़े से बाँधकर पत्तों की तलाश में वन-वन डोलती आदिवासी युवतियाँ। उन आदिवासी युवतियों के फूले हुए पाँव और इन पत्थर तोड़ती हुई पहाड़िनों के हाथों में पड़ी गाँठे। दोनों एक ही कहानी कहते हैं कि आम जिंदगी की कहानी हर जगह एक-सी है कि सारी मलाई एक तरफ, सारे आँसू, अभाव, यातना और वंचना एक तरफ।

तभी उन्हें गमगीन देखकर जितेन नार्गे ने कहा–'मैडम यह मेरे देश की आम जनता है। इन्हें तो आप कहीं भी देख लेंगी। आप इन्हें नहीं; पहाड़ों की सुंदरता को देखिए जिसके लिए आप इतने पैसे खर्च करके आई हैं।" किंतु लेखिका मन-ही-मन सोच रही थी कि ये देश की आम जनता नहीं है, जीवन का संतुलन भी हैं। ये कितना कम लेकर समाज को कितना अधिक वापस लौटा देती हैं। तभी लेखिका ने देखा कि वे श्रम सुंदरियाँ किसी बात पर खिल-खिलाकर हँस पड़ीं और ऐसा लगा कि जीवन लहरा उठा हो, सारा खंडहर ताजमहल बन गया हो।

स्कूल से लौटते पहाड़ी बच्चे–लेखिका लगातार ऊँचाइयों की ओर बढ़ रही थी। रास्ते में स्कूल से लौटते पहाड़ी बच्चे मिले जिनके बारे में नार्गे बता रहा था। यहाँ का जीवन कठोर है यहाँ एक ही स्कूल है। दूर-दूर से बच्चे उसी स्कूल में जाते हैं। इस स्कूल में पढ़ने वाले अधिकांश बच्चे अपनी माँओं के साथ काम करते हैं। आगे बढ़ते जा रहे थे खतरा भी बढ़ता ही जा रहा था। रास्ते सँकरे होते जा रहे थे। रास्ते में जगह-जगह लिखी हुई चेतावनियाँ खतरों के प्रति सजग कर रही थीं।

चाय के बागानों में युवतियाँ–सूरज ढल रहा था, उसी समय पहाड़ी औरतें गाएँ चराकर वापस लौट रही थीं। कुछ लड़कियों के सिर पर लकड़ियों के भारी गट्ठर थे। आसमान बादलों से घिरा था। उतरती संध्या में जीप अब चाय के बागानों से गुजर रही थी। वहाँ दृश्य देखा कि चाय के भरे-भरे बागानों में कई युवतियाँ बोकू (सिक्किम-परिधान) पहने हुए चाय की पत्तियाँ तोड़ रही थीं। नदी की तरह उफान लेता यौवन और श्रम से दमकता गुलाबी चेहरा और डूबते सूर्य की इंद्रधनुषी छटा को देखकर मंत्रमुग्ध-सी लेखिका चीख पड़ी। युवतियों का अधिक सौंदर्य लेखिका के लिए असह्य था।

लायुंग में पड़ाव–गगनचुंबी पहाड़ों के नीचे साँस लेती एक छोटी-सी बस्ती लायुंग। तिस्ता नदी के तीर पर लकड़ी के बने घर में ठहरे। अपनी सुस्ती दूर करने के उद्देश्य से हाथ-मुँह धोकर तिस्ता नदी के किनारे पत्थरों पर बैठ गई। वातावरण में अद्भुत शांति, आँखें भर आईं। लेखिका ने अनुभव किया कि ज्ञान का नन्हा सा बोधिसत्व जैसे भीतर उगने लगा। वहीं सुख शांति है, सुकून है जहाँ अखंडित संपूर्णता है–पेड़-पौधे, पशु, पक्षी और आदमी सब अपनी-अपनी लय, ताल और गति में हैं। आज की पीढ़ी ने प्रकृति की इस लय, ताल और गति से खिलवाड़ कर अक्षम्य अपराध किया है।

अँधेरा होने से पहले तिस्ता नदी की धार तक पहुँची। लकड़ी के बने छोटे से गेस्ट हाऊस में रुके। रात गहराने लगी। जितेन ने गाना शुरू कर दिया। एक-एक कर सभी सैलानी गोल-गोल घेरा बनाकर नाचने लगे। लेखिका की पचास वर्षीया सहेली कुमारियों को भी मात करती हुई नाचने लगी, जिसे देखकर लेखिका अवाक् रह गई।

लायुंग की सुबह वह टहलने निकली। बर्फ की तलाश थी। कहीं बर्फ नहीं मिली। घूमते हुए सिक्किमी नवयुवक ने बताया कि बढ़ते प्रदूषण के कारण स्नो-फॉल लगातार कम होती जा रही है। 500 फीट ऊँचाई पर 'कटाओ' में बर्फ मिल जाएगी। 'कटाओ' की ओर सफर शुरू किया। बादलों को चीरती हुई खतरनाक रास्तों पर जीप आगे बढ़ रही थी। जगह-जगह चेतावनियाँ लिखी हुईं थीं। सबकी साँसें रुकी हुईं। कटाओ के करीब पहुँचे। नार्गे ने बताया कि 'कटाओ हिंदुस्तान का स्विट्जरलैंड" है। आगे बढ़ने पर चारों ओर साबुन के झाग की तरह गिरी हुई बर्फ दिखी। सभी सैलानी जीप से उतर कर मस्ती से बर्फ में कूदने लगे। घुटनों तक नरम-नरम बर्फ। सब फोटो खींच रहे थे और लेखिका सोच रही थी कि शायद ऐसी ही विभोर कर देने वाली दिव्यता के बीच हमारे ऋषि-मुनियों ने वेदों की रचना की होगी। जीवन मूल्यों को खोजा होगा। 'सर्वे भवंतु सुखिनः' का महामंत्र पाया होगा। यह ऐसा सौंदर्य जिसे बड़े से बड़ा अपराधी भी देख ले तो क्षणों के लिए ही सही करुणा का अवतार बुद्ध बन जाए। दूसरी ओर लेखिका की सहेली मणि भी दार्शनिक की तरह कह रही थी–"ये हिम शिखर जल स्तंभ हैं, पूरे एशिया के। देखो, प्रकृति भी किस नायाब ढंग से सारा इंतजाम करती है। सर्दियों में बर्फ के रूप में जल संग्रह कर लेती

है और गर्मियों में पानी के लिए जब त्राहि-त्राहि मचती है तो ये ही बर्फ शिलाएँ पिघल-पिघलकर जलधारा बन हमारे सूखे कंठों को तरावट पहुँचाती हैं। कितनी अद्‌भुत व्यवस्था है जल संचय की !" इस तरह नदियों का कितना उपकार है।

थोड़ी दूर ही चीन की सीमा–आगे बढ़े, फौज की छावनियाँ दिखाई दीं। थोड़ी दूर पर चीन की सीमा है। जहाँ सैनिक माइनस 15 डिग्री सेल्सियस पर पहरा देते हैं। एक सैनिक लेखिका के पूछने पर बता रहा था कि आप चैन की नींद सो सकें, इसीलिए हम यहाँ पहरा देते हैं। लेखिका सोचने लगी कि जिन बर्फीले इलाकों में बैसाख के महीने में पाँच मिनट में हम ठिठुरने लगे तो ये हमारे जवान पौष, माघ के महीने में जब सब कुछ जम जाता है–तब कैसे तैनात रहते होंगे?

लायुंग से यूमथांग की ओर–लायुंग से यूमथांग की ओर बढ़े। यहाँ एक नया आकर्षण था। ढेरों रूडोडेंड्रो और प्रियुता के फूल। इन घाटियों में बंदर भी दिखाई दिए। यूमथांग पहुँचे। मंजिल तक पहुँचने की खुशी थी। वहाँ चिप्स बेचती सिक्किमी युवती से पूछा था–क्या तुम सिक्किमी हो तो उसने कहा–"नहीं; मैं इंडियन हूँ।" यह सुन लेखिका को बहुत अच्छा लगा। वहाँ पहाड़ी कुत्ते भी थे जिन्हें देखकर मणि ने कुत्तों के बारे में बताया कि–ये पहाड़ी कुत्ते हैं ये भौंकते नहीं है। ये सिर्फ चाँदनी रात में ही भौंकते है। यह सुनकर लेखिका को आश्चर्य हुआ–क्या समुद्र की तरह कुत्तों पर भी चाँदनी कामनाओं का ज्वार-भाटा जगाती है। जितेन तरह-तरह की जानकारियाँ देता रहा–यहाँ गुरुनानक की थाली से चावल छिटक गए थे। यहाँ देवी-देवताओं का निवास है, यहाँ जो गंदगी फैलाएगा वह मर जाएगा। हम लोग यहाँ गंदगी नहीं फैलाते हैं, हम पहाड़, नदी, झरने आदि की पूजा करते हैं। हम गंगटोक नहीं गंतोक कहते हैं। जितेन गंतोक के बारे में बताने लगा कि सिक्किम के भारत में मिलने के बाद कप्तान शेखर दत्ता के सोच के अनुसार घाटियों में रास्ते निकाल कर टूरिस्ट-स्पॉट बनाया है। अभी भी रास्ते बन रहे हैं और नए स्थानों की खोज जारी हैं।

लेखिका मन-ही-मन सोचती है कि मनुष्य की असमाप्त खोज का नाम सौंदर्य है।

शब्दार्थ

पृष्ठ संख्या 17

अतींद्रियता–इंद्रियों से परे। **उजास**–प्रकाश, उजाला। **सम्मोहन**–मोहित होना।

पृष्ठ संख्या 18

कपाट–दरवाजा। **रकम-रकम**–तरह-तरह के। **अवधारणाएँ**–सोच, विचार।

पृष्ठ संख्या 19

रफ्ता-रफ्ता–धीरे-धीरे। **ओझल**–दृष्टि से परे। **वीरान**–सुनसान। **विशालकाय**–बड़े आकार का।

पृष्ठ संख्या 20

मुंडकी–सिर। **जल-प्रपात**–झरना। **पराकाष्ठा**–चरमसीमा। **मशगूल**–व्यस्त। **अभिशप्त**–शापित, जिसे शाप मिल चुका हो।
सरहदों–सीमाओं। **शिद्‌दत**–प्रबलता। **तामसिकताएँ**–बुरी भावनाओं से युक्त, तमोगुण से युक्त, कुटिल। **अनमनी**–उदास। **नज़ारे**–दृश्य।

पृष्ठ संख्या 21

सतत–निरंतर, लगातार। **वासनाएँ**–बुरी इच्छाएँ। **तंद्रिल-अवस्था**–नींद की स्थिति में। **सयानी**–चतुर, समझदार। **जन्नत**–स्वर्ग।
चैरवेति-चैरवेति–चलते रहो, चलते रहो। **वजूद**–अस्तित्व, औकात।

पृष्ठ संख्या 22

संजीदा–सावधान, गंभीर। **चूक**–भूल।

पृष्ठ संख्या 23

हाथों में पड़े ठाठे–हाथों में पड़ने वाली गाँठें। **गमहीन**–उदासीन, दुख से रहित। **गमगीन**–दुखी। **वेस्ट एंड रिपेइंग**–कम लेना और ज्यादा देना। **वर्बीला**–बढ़े हुए पेट वाला।

पृष्ठ संख्या 24

सात्विक–शुद्‌ध, पवित्र। **आभा**–चमक। **असह्य**–जो सहन न हो सके। **मद्‌धिम-मद्‌धिम**–धीमे-धीमे। **परिंदे**–पक्षी।

पृष्ठ संख्या 25

हलाहल–विष, जहर। **संक्रमण**–संयोग, मिलन। **सुर्खियों में**–चर्चा में। **गुड़ुप**–निगल लिया।

पृष्ठ संख्या 26

विभोर–आनंद में डूब जाना। **वृत्ति**–जीविका। **रामरोछो**–अच्छा है।

पृष्ठ संख्या 27

ख्वाहिश–इच्छा, अभिलाषा। **टूरिस्ट स्पॉट**–भ्रमण स्थल। **विभोर**–प्रसन्न। **ठगा-सा रह जाना**–आश्चर्य चकित रह जाना। **नायाब**–अद्वितीय। **लम्हों**–क्षणों। **बॉर्डर एरिया**–सीमावर्ती क्षेत्र। **मियाद**–सीमा, अवधि।

पृष्ठ संख्या 28

फला-फूला–उन्नत अवस्था में। **आबोहवा**–जलवायु।

पृष्ठ संख्या 29

विस्मय–आश्चर्य से। **फुट-प्रिंट**–पैरों के चिह्न।

अभ्यास प्रश्नोत्तर

I. बहुविकल्पीय प्रश्न

1. लेखिका ने प्रार्थना के बोल 'साना-साना हाथ जोड़ि, ·····' किससे सीखे थे?
   (*i*) अपनी बेटी से (*ii*) अपने गुरु से (*iii*) एक नेपाली युवती से (*iv*) इनमें से कोई नहीं
2. यूमथांग गैंगटॉक से कितनी दूर स्थित है?
   (*i*) 149 कि०मी० (*ii*) 150 कि०मी० (*iii*) 151 कि०मी० (*iv*) 152 कि०मी०
3. सिक्किम में किसी बुद्धिस्ट की मृत्यु होने पर उसकी आत्मा की शांति के लिए क्या किया जाता है?
   (*i*) दान-पुण्य किया जाता है। (*ii*) गरीबों को खाना खिलाया जाता है।
   (*iii*) किसी पवित्र स्थान पर एक सौ आठ श्वेत पताकाएँ फहराई जाती हैं।
   (*iv*) उपर्युक्त सभी
4. पहाड़ों पर सड़क बनाने का काम कौन करता है?
   (*i*) पब्लिक वर्क्स डिपार्टमेंट (*ii*) बॉर्डर रोड आर्गेनाइजेशन
   (*iii*) इंडियन आर्मी (*iv*) इनमें से कोई नहीं
5. बोकु कहाँ का पारंपरिक परिधान है?
   (*i*) तिब्बत (*ii*) नेपाल (*iii*) भूटान (*iv*) सिक्किम
6. सिक्किम में अधिकतर लोगों की जीविका का साधन क्या है?
   (*i*) पहाड़ी आलू की खेती (*ii*) धान की खेती (*iii*) दारू का व्यापार (*iv*) उपर्युक्त सभी
7. लायुंग समुद्र तल से कितनी ऊँचाई पर स्थित है?
   (*i*) 12000 फीट (*ii*) 14000 फीट (*iii*) 16000 फीट (*iv*) 18000 फीट
8. सिक्किमी नवयुवक के अनुसार पहाड़ों पर स्नो-फॉल लगातार कम होते जाने का क्या कारण है?
   (*i*) ग्लोबल वार्मिंग (*ii*) प्रदूषण (*iii*) जनसंख्या वृद्धि (*iv*) पेड़ों की कटाई
9. किसे भारत का स्विट्ज़रलैंड कहा जाता है?
   (*i*) गैंगटॉक को (*ii*) यूमथांग को (*iii*) कटाओ को (*iv*) सिलीगुड़ी को
10. भारत में मिलने से पूर्व सिक्किम में किस प्रकार की शासन व्यवस्था थी?
    (*i*) राजशाही (*ii*) तानाशाही (*iii*) प्रजातांत्रिक (*iv*) इनमें से कोई नहीं

उत्तर– 1. (*iii*) 2. (*i*) 3. (*iii*) 4. (*ii*) 5. (*iv*) 6. (*iv*)
7. (*ii*) 8. (*ii*) 9. (*iii*) 10. (*i*)

II. पाठ आधारित महत्वपूर्ण प्रश्न (3 अंक)

1. हिंदुस्तान का स्विट्जरलैंड 'कटाओ' के अद्भुत सौंदर्य का चित्रण कीजिए, जहाँ सैलानी आनंद-विभोर हो उठे।

उत्तर हिंदुस्तान का स्विट्जरलैंड कटाओ पर पड़ी बर्फ ऐसी लग रही थी मानो पहाड़ों पर पाउडर छिड़क दिया गया हो। कहीं पाउडर बची रह गई है और कहीं धूप में बह गई हो। और आगे पूरी तरह बर्फ से ढके पहाड़ थे साबुन के झाग की तरह सब ओर गिरी हुई बर्फ। सभी सैलानी बर्फ में कूद कर आनंद विभोर हो रहे थे। घुटनों तक नरम-नरम बर्फ। ऊपर आसमान और बर्फ से ढके पहाड़ एक हो रहे थे। लेखिका के पाँव झन-झनकर रहे थे। मन वृंदावन हो रहा था। उसकी इच्छा हो रही थी कि बर्फ पर लेटकर इस बर्फीली जन्नत

को जी भर देख ले। संपूर्णता के इन क्षणों में वह सोचने लगी थी कि ऐसे ही विभोर कर देने वाली दिव्यता के बीच हमारे ऋषि-मुनियों ने वेदों की रचना की होगी।

2. लेखिका को पहली बार अहसास हुआ कि जीवन का आनंद यही चलायमान सौंदर्य है, कैसे?

उत्तर लेखिका ने धीरे-धीरे धुंध की चादर छँटने पर देखा कि सब ओर जन्नत बिखरी पड़ी है। नजरों के छोर तक खूबसूरती ही खूबसूरती बिखरी पड़ी है, जिसे देख लेखिका को आश्चर्य हो रहा था कि पलभर में ब्रह्मांड में कितना कुछ घटित हो रहा है। सतत् प्रवाहमान झरने, नीचे वेग से बहती तिस्ता नदी। सामने उठती धुंध। ऊपर मँडराते आवारा बादल। मद्धिम-मद्धिम हवा में हिलोरे लेते प्रियुता और रूडोडेंड्रो के फूल। सब अपनी-अपनी लय, तान और प्रवाह में बहते हुए दिखाई दिए। तब उसे अहसास हुआ कि जीवन का आनंद यही चलायमान सौंदर्य है।

3. लेखिका के लिए किसका सौंदर्य असह्य था?

उत्तर लेखिका ने देखा कि सूरज ढल रहा था, पहाड़ी औरतें गाएँ चराकर लौट रही थीं। कुछ पहाड़िनों के सिर पर लकड़ियों के भारी-भरकम गट्ठर थे। ऊपर आसमान धुंध और बादलों से घिरा था। तभी एक दृश्य और देखा कि नीचे चाय के बागानों में कई युवतियाँ बोकु पहने चाय की पत्तियाँ तोड़ रही थीं। नदी की तरह उफान लेता उनका यौवन और श्रम से दमकता गुलाबी चेहरा। उनमें एक युवती ने चटक लाल रंग का बोकु पहन रखा था। सघन हरियाली के बीच चटक लाल रंग डूबते सूरज की स्वर्णिम आभा में कुछ इस तरह इंद्रधनुषी छटा बिखेर रहा था जिसे देखकर लेखिका चीख पड़ी थी। उन युवतियों का सौंदर्य लेखिका के लिए असह्य हो रहा था।

4. लेखिका यूमथांग को निकलने से पहले प्रातः बालकनी की ओर क्यों भागी?

उत्तर लेखिका को यूमथांग निकलने से पहले सवेरे जगने पर वह बालकनी की ओर इसलिए भागी थी क्योंकि उसे लोगों ने बताया था कि यदि मौसम साफ हो तो बालकनी से भी हिमालय की सबसे ऊँची चोटी कंचनजंघा दिखाई देती है। लेखिका की आशा, इच्छा पूरी न हो सकी, क्योंकि आसमान हल्के-हल्के बादलों से ढका था।

5. कवी लोंग स्टॉक किसलिए प्रसिद्ध है?

उत्तर कवी लोंग-स्टॉक की प्रसिद्धि का कारण है कि यहाँ पर 'गाइड' नामक प्रसिद्ध फिल्म की शूटिंग हुई थी। तिब्बत के चीस-खे बाम्सन ने लेपचाओं के शोमेन से कुंजतेक के साथ संधि-पत्र पर हस्ताक्षर किए थे। यहाँ स्मारक के रूप में एक पत्थर भी है, जो लेपचा और भुटिया सिक्किम की इन दोनों स्थानीय जातियों के बीच चले सुदीर्घ झगड़ों के बाद शांति वार्ता की शुरुआती स्थल है।

6. प्रेअर व्हील के बारे में जानकर लेखिका के मन में कौन से भाव आते हैं?

उत्तर लेखिका ने गंतोक से यूमथांग के रास्ते में एक कुटिया में एक घूमता हुआ धर्म चक्र देखा जिसके बारे में जितेन नार्गे ने बताया कि यह प्रेअर व्हील है, इसे घुमाने से सारे पाप धुल जाते हैं।

लेखिका के मन में ऐसी अवधारणा को जानकर विचार आया कि चाहे मैदान हो या पहाड़, तमाम वैज्ञानिक प्रगतियों के बावजूद इस देश की आत्मा एक जैसी है। लोगों की आस्थाएँ, अंधविश्वास, पाप-पुण्य की अवधारणाएँ एक जैसी हैं।

7. लायुंग में तिस्ता नदी के किनारे पत्थरों पर बैठी लेखिका क्या देखकर विचार मग्न थी?

उत्तर लेखिका का यूमथांग के रास्ते में लायुंग में पड़ाव था। वहाँ हाथ-मुँह धोकर तिस्ता नदी के किनारे पत्थरों पर बैठी सामने देख रही थी कि बहुत ऊपर से बहता झरना, नीचे बहती कल-कल करती तिस्ता नदी में मिल रहा था। मद्धिम-मद्धिम हवा बह रही थी। पेड़-पौधे झूम रहे थे। गहरे बादलों की परत ने चाँद को ढक लिया था। बाहर परिंदे और लोग अपने घरों को लौट रहे थे। वातावरण में अद्भुत शांति थी। लेखिका के मन में विचार आ रहे थे कि पेड़, पौधे, पशु और आदमी सब अपनी-अपनी लय, ताल और गति में हैं।

8. 'कटाओ' के प्राकृतिक मनोहारी दृश्य को देखकर लेखिका क्या सोचने लगी थी?

उत्तर कटाओ के प्राकृतिक मनोहारी और एकदम शांत सौंदर्य को देख लेखिका सोचने लगी थी कि शायद ऐसी ही विभोर कर देने वाली दिव्यता के बीच हमारे ऋषि-मुनियों ने वेदों की रचना की होगी। जीवन के सत्यों को खोजा होगा। 'सर्वे भवंतु सुखिनः' का महा मंत्र पाया होगा। अंतिम संपूर्णता का प्रतीक यह सौंदर्य ऐसा है कि बड़े से बड़ा अपराधी इसे देख ले तो वह भी थोड़ी देर के लिए करुणा का अवतार बुद्ध बन जाएगा।

9. सिक्किमी युवती से मिलकर लेखिका को क्यों अच्छा लगा?

उत्तर यूमथांग में चिप्स बेचती एक सिक्किमी युवती से लेखिका ने पूछा कि क्या तुम सिक्किमी हो? तो उसने कहा कि मैं इंडियन हूँ—यह सुनकर लेखिका को अच्छा लगा। लेखिका को अच्छा लगा कि सिक्किम के लोग भारत में मिलकर बहुत खुश हैं। जब सिक्किम रजवाड़ा था तब टूरिस्ट उद्योग इतना नहीं फूला-फला था। हर एक सिक्किमी भारतीय आबो हवा में इस कदर घुल-मिल गया है कि लगता ही नहीं, कभी सिक्किम भारत में नहीं था।

10. लेखिका जैसे-जैसे ऊँचाई की ओर जा रही थी। वैसे-वैसे सारे दृश्य ओझल होते प्रतीत हो रहे थे और हिमालय का विराट रूप दिखाई दे रहा था—उन सबको चित्रित कीजिए।

उत्तर लेखिका जैसे-जैसे ऊँचाई की ओर बढ़ती जा रही थी वैसे-वैसे बाजार और बस्तियाँ पीछे छूटने लगे। चलते-चलते स्वेटर बुनती नेपाली युवतियाँ और पीठ पर भारी-भरकम कार्टून ढोते बौने से दिखते बहादुर नेपाली ओझल हो रहे थे। नीचे देखने पर घाटियों में पेड़-पौधों

के बीच छोटे-छोटे घर दिखाई दे रहे थे। हिमालय भी अब छोटी-छोटी पहाड़ियों के रूप में नहीं वरन अपने विराट रूप एवं वैभव के साथ सामने आ रहा था।

11. प्रकृति के इस पल-पल परिवर्तित होते हुए चलायमान सौंदर्य को देखकर लेखिका के मन में धीरे-धीरे क्या चल रहा था?

उत्तर प्रकृति के इस पल-पल परिवर्तित होते हुए चलायमान सौंदर्य को देखकर लेखिका संपूर्णता के उन क्षणों में बिखरे हुए सौंदर्य से इस कदर एकात्म हो रही थी कि भीतर-बाहर की रेखा मिट गई थी, आत्मा की सारी खिड़कियाँ खुलने लगी थीं। वह सचमुच ईश्वर के निकट होने का एहसास कर रही थी। नेपाली युवती से सीखी प्रार्थना होंठों को छूने लगी थी–'साना-साना हाथ जोड़ि... ।' तभी अतींद्रिय संसार खंड-खंड हो गया। वह महाभाव सूखी टहनी-सा सूख गया।

12. कटाओ के सौंदर्य को देख लेखिका को बरबस किस कवि की स्मृति कौंध गई।

उत्तर लेखिका ने 'कटाओ' को अद्‌भुत सौंदर्य को देखा तो कवि मिल्टन की स्मृति जीवंत हो उठी। उसके दिमाग में कौंधा कि मिल्टन ने ईव की सुंदरता का वर्णन करते हुए लिखा था कि शैतान भी उसे देखकर ठगा-सा रह जाता था और दूसरों का अमंगल करने की वृत्ति भूल जाता था।

इसी तरह लेखिका भी कटाओ के सौंदर्य को देख कह उठी थी कटाओ का सौंदर्य ऐसा है जहाँ बड़े से बड़ा अपराधी भी कुछ क्षणों के लिए ही सही 'करुणा का अवतार' बुद्‌ध बन जाए।

13. अपनी यात्रा में लेखिका ने पहाड़ी लोगों के किन गुणों का आकलन किया है? 'साना-साना हाथ जोड़ि...' पाठ के आधार पर स्पष्ट कीजिए।

उत्तर अपनी सिक्किम और यूमथांग यात्रा में लेखिका ने पहाड़ी लोगों को अत्यंत निकट से देखा। उसने पहाड़ी लोगों के निम्नलिखित गुणों का आकलन किया–

(क) **प्रकृति संरक्षण में योगदान**–पहाड़ी लोगों का प्रकृति से घनिष्ठ लगाव एवं जुड़ाव होता है। वे प्रकृति के हर भाग का संरक्षण करते हैं।

(ख) **प्रकृति से धार्मिक आस्था रखना**–पहाड़ी लोग प्रकृति से धार्मिक आस्था जोड़ लेते हैं, और मानते हैं कि प्रकृति को प्रदूषित करने से उनकी मृत्यु हो सकती है।

(ग) **परिश्रमी स्वभाव**–पहाड़ी अत्यंत परिश्रमी होते हैं। वे अधिक परिश्रम करके बहुत कम पाते हैं फिर भी खुश रहते हैं।

(घ) **राष्ट्र विकास में सहभागिता**–पहाड़ी लोगों के परिश्रम के कारण ही पहाड़ी स्थानों पर पर्यटन उद्‌योग फल-फूल रहा है। इस प्रकार राष्ट्र विकास में उनकी प्रत्यक्ष एवं परोक्ष सहभागिता है।

14. विभिन्न मूल्यों के आलोक में ड्राइवर जितेन नार्गे का चरित्र-चित्रण कीजिए।

उत्तर विभिन्न मानवीय मूल्यों के आलोक में ड्राइवर जितेन नार्गे का चरित्र-चित्रण निम्नलिखित है–

(क) **प्रकृति से लगाव**–जीप चालक जितेन नार्गे प्रकृति से घनिष्ठ जुड़ाव रखता है। वह प्रकृति के सौंदर्य का पारखी है तथा प्रकृति के इस सौंदर्य के बारे में पर्यटकों को भी बताता है।

(ख) **कर्तव्यनिष्ठ**–जितेन नार्गे जीप चालक होने के साथ-साथ कुशल गाइड भी है। वह अपने कर्तव्य को ईमानदारीपूर्वक निभाता है।

(ग) **व्यापक दृष्टिकोण**–जितेन का दृष्टिकोण व्यापक है। वह प्रांत, जाति, धर्म का बंधन नहीं मानता है।

(घ) **मातृभूमि से लगाव**–जितेन को मातृभूमि से गहरा लगाव है। उससे बात करते समय इस लगाव को महसूस किया जा सकता है।

15. सीमा पर देश की रक्षा करने वाले सैनिकों के किन-किन गुणों को आप अपनाना चाहेंगे?

उत्तर सीमा पर अपनी जान की परवाह न करके सैनिक देश की रक्षा में तत्पर रहते हैं। मैं उनके जीवन के निम्नलिखित गुणों को अपनाना चाहूँगा–

(क) **राष्ट्रस्मिता की चिंता**–जिस प्रकार सैनिक राष्ट्रस्मिता के लिए अपने प्राणों की बाजी लगा देते हैं, उसी प्रकार मैं भी राष्ट्रस्मिता को सर्वोपरि समझूँगा।

(ख) **राष्ट्र-स्वाभिमान की रक्षा**–सैनिकों की भाँति मैं भी राष्ट्र-स्वाभिमान के लिए अपना तन-मन-धन समर्पित कर दूँगा।

(ग) **उत्तरदायित्वों का निर्वहन**–सैनिकों की भाँति मैं भी अपने सुख-दुख की परवाह किए बिना अपने उत्तरदायित्वों का निर्वहन करूँगा।

(घ) **संकुचित दृष्टिकोण का त्याग**–जिस प्रकार सैनिक जाति, धर्म, भाषा, प्रांत आदि का संकुचित दृष्टिकोण त्याग चुके होते हैं, उसी प्रकार मैं संकुचित दृष्टिकोण का त्यागकर व्यापक दृष्टिकोण अपनाऊँगा।

16. 'जल-संरक्षण' से आप क्या समझते हैं? हमें जल-संरक्षण को गंभीरता से लेना चाहिए, क्यों और किस प्रकार? जीवनमूल्यों की दृष्टि से जल-संरक्षण पर चर्चा कीजिए। (*Delhi* 2017)

उत्तर 'जल-संरक्षण' का अभिप्राय है – जल के उपयोग को कम-से-कम करना तथा कृषि, बागवानी आदि के लिए अवशिष्ट जल का पुनः चक्रण करना। वस्तुतः ब्रह्मांड के प्रत्येक प्राणी का जीवन आधार जल ही होता है। फिर भी मनुष्य अपनी सुविधा, दिखावा व विलासिता को दिखाने हेतु अमृततुल्य जल की बर्बादी करने से नहीं चुकता है। जल की बचत के बारे में पलभर नहीं सोचता है। परिणामस्वरूप जल-संकट की भयावह स्थिति पैदा हो चुकी है। पृथ्वी और पृथ्वीवासी दोनों जल के अभाव की

मार को झेल रहे हैं। अधिकांश नदियों का जलस्तर बहुत कम हो चुका है। बहुत सारी नदियाँ जिन्हें हम जीवन-रेखा कहते हैं वे विलुप्त होने की कगार पर हैं। अत: हमें जल-संरक्षण को गंभीरता से लेना चाहिए और हर संभव प्रयास करना चाहिए। मनुष्य जाति यदि अपनी आदतों को सुधारे और आने वाली पीढ़ियों के बारे में सोचे तो काफी मात्रा में जल की बचत संभव है। किसी ने ठीक ही कहा है कि 'बूँद-बूँद से घड़ा भरता है'। यद्यपि हम इस कथन को नज़रअंदाज कर देते हैं। हमें पानी की एक बूँद बहुत कम लगती है, परंतु इसे नहीं बचाया गया तो पृथ्वी का बहुत सारा पानी बर्बाद हो जाएगा। अत: निम्नलिखित बातों पर ध्यान दिया जाए तो जल-संरक्षण संभव है –

1. जल की एक बूँद भी बर्बाद न करें और ना ही प्रदूषित करें।
2. सार्वजनिक नलों को खुला न छोड़ें।
3. लॉन तथा फूल-पौधों आदि की सिंचाई शाम को करें।
4. सब्जियों को किसी बर्तन में रखकर धोएँ।
5. ब्रश करते समय मुँह धोने के लिए लगातार नल न चलाएँ।
6. गाड़ियों को बाल्टी में पानी लेकर धोएँ।
7. अधिक-से-अधिक वृक्षारोपण करें ताकि वे वर्षा में सहायक हों।
8. प्रत्येक गाँव, बस्ती या शहर में वर्षा जल को संग्रहित करने के लिए सार्थक एवं प्रभावी कदम उठाने की पहल करें।
9. जल-संरक्षण हेतु अपने आसपास के लोगों को प्रेरित करें।
10. पाठ्यपुस्तकों में 'जल-संरक्षण' को आनिवार्य विषय के रूप में पढ़ाया जाए।

उपर्युक्त उपायों को अपनाकर 'जल-संरक्षण' को संभव बनाया जा सकता है।

वर्तमान जल-संकट को देखते हुए इसे निस्संदेह विश्वव्यापी संकट कहा जा सकता है। अत: इसका समाधान शीघ्रातिशीघ्र करने की आवश्यकता है। समय रहते समाज के प्रत्येक लोग यदि इस संकट के समाधान हेतु उठ खड़े होंगे तभी जल की अनवरत उपलब्धता को सुनिश्चित किया जा सकता है।

17. 'साना-साना हाथ जोड़ि' पाठ में लेखिका ने प्रदूषण का उल्लेख किया है। प्रदूषण बढ़ने के कारणों का ज़िक्र करते हुए बताइए कि इसे रोकने में आप अपना योगदान किस तरह दे सकते हैं?

उत्तर सिक्किम की अपनी यात्रा के दौरान लेखिका ने सोचा कि उसे लायुंग में बर्फ़ देखने को मिल जाएगी, लेकिन एक सिक्किमी युवक ने बताया कि प्रदूषण के कारण अब बर्फ़ गिरनी कम होती जा रही है। इस बढ़ते प्रदूषण के अनेक कारण हैं; जैसे-यातायात के विभिन्न साधनों से निकलता गर्म धुआँ, फैक्ट्रियों तथा थर्मल प्लांटों से निकलने वाला धुआँ, कूड़ा-करकट तथा अन्य अवशिष्ट पदार्थों को जलाना, भोजन बनाने के लिए उपले, लकड़ियाँ, कोयला आदि को जलाना, वायुयानों का शोर, जल-स्रोतों का दूषित होना, उर्वरकों तथा कीटनाशकों का प्रयोग आदि।

बढ़ते प्रदूषण को रोकने के लिए मैं जन-जागरूकता फैलाना चाहूँगा। उन्हें पॉलीथीन का प्रयोग न करने, कूड़ा-करकट तथा अवशिष्ट पदार्थ न जलाने, सार्वजनिक वाहनों का प्रयोग करने, अधिकाधिक पेड़ लगाने, उनकी देखभाल करने तथा प्रकृति से निकटता बढ़ाने का आग्रह करूँगा। इसके अलावा मैं लोगों से यह भी कहूँगा कि वे जल-स्रोतों को साफ-सुथरा बनाए रखें।

18. प्रकृति जल-संचय की अद्‌भुत व्यवस्था करती है। 'साना-साना हाथ जोड़ि' पाठ के आधार पर स्पष्ट कीजिए। पानी बचाने के लिए आप अपना योगदान किस प्रकार दे सकते हैं?

उत्तर प्रकृति की हर व्यवस्था अद्‌भुत होती है। वह जल बचाने के लिए उसका संचय भी अद्‌भुत ढंग से करती है। यह व्यवस्था हिमशिखरों के रूप में दिखाई देती है। प्रकृति सरदियों में जिस पानी को बरफ़ के रूप में संचित करती है, उसी पानी को गरमी में प्यासे होंठों को तर करने के लिए अमृत के रूप में लोगों को बाँटती है। इतना ही नहीं, यही पानी फसल उगाने और धरती की प्यास बुझाने के काम में भी लाया जाता है। ऐसे बहुमूल्य जल को बचाने के लिए हमें पानी को बरबाद होने से बचाना चाहिए। खुले नलों से बहते पानी को तुरंत बंद कर देना चाहिए। घर तथा रसोई के अपशिष्ट पानी से गमलों में लगाए गए पौधों की सिंचाई करनी चाहिए। जल-स्रोतों के पास नहाना, कपड़े धोना, जानवरों को नहलाना जैसे काम नहीं करना चाहिए। कुल मिलाकर, इनमें दूषित पानी नहीं मिलने देना चाहिए।

अभ्यास प्रश्न पत्र

नाम– ..... **रोल नं.** .....

समय– 30 मिनट **कुल अंक– 12**

1. निम्नलिखित में से किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर दीजिए। **[3×4=12]**

(क) सिक्किम यात्रा के दौरान फ़ौजी छावनियों को देखकर लेखिका के मन में उपजे विचार को अपने शब्दों में लिखिए।

.....

.....

.....

.....

.....

(ख) कटाओ कहाँ है? इसके प्राकृतिक सौंदर्य का अपनी भाषा में वर्णन कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

(ग) 'साना-साना हाथ जोड़ि' पाठ के आधार पर बताइए कि देश की सीमाओं पर तैनात सेना के जवानों को कैसी-कैसी मुसीबतें झेलनी पड़ती हैं?

.....

.....

.....

.....

.....

(घ) कटाओ पर किसी दुकान का नहीं होना कैसे वरदान है? स्पष्ट कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

(ङ) प्रकृति के विराट स्वरूप को देखकर पाठ की लेखिका मधु कांकरिया को कैसी अनुभूति हुई? अपने शब्दों में लिखिए।

.....

.....

.....

.....

.....

❑❑❑